Code (1)

यहाँ एक नदी बहती थी...

कुछ साल पहले यहाँ,
एक नदी शान से बहती थी।
उस नदी मे कुछ खास था,
जो लोगों का दिल बहलाती थी।
उस की आवाज़ सूनकर,
दिल हो जाता था खूश।
वह नदी कितनी साफ थी;
न गंदगी, न दूरगंद।
कितनी शूध्ध थी वह नदी।
कितनी अलग-अलग तरह की,
मछलियां थी उस नदी मे।
वह नदी की पानी से ही,
गाँव वाले अपना काम करते थे।
उस नदी के पानी से नहाते,
कपड़ा धोते, पानी पीते,
बर्तन धोते आदि इसी तरह की,
ज़रुरतों के लिए वह नदी का पानी,
वह उपयोग करते रहते थे।
गाँववाले जितना पानी चाहते,
उतना पानी वह नदी से लेते।
फिर भी उस नदी का पानी,
कभी कम न होता था।

Code (X)

गाँववाले उस नदी से बहुत,
प्यार करते थे।
वह कभी उस नदी को गंदा,
नहीं करते थे।
उसे जितना हो सके उतना,
साफ रखते थे लेकिन वह नदी,
पहले से ही शुध्ध थी।
गाँववाले उस नदी को भगवान,
का दिया वर्दान मानते थे।
उन गाँववालों के लिए वह नदी,
खज़ाना थी जो गहने, मोती,
सोना, चांदी के बराबर थी।
बच्चो के लिए तो वह नदी,
दोस्त जैसी थी।
बच्चे उस नदी मे मछलियाँ,
पकड़ने आते थें।
बड़े पकड़ते, छोटे पकड़ते,
सब पकड़ते थे मछलियाँ।
मछलियाँ पकड़ते और घर जाकर,
अपना भोजन बनाकर खाते।
कितनी स्वादिशट मछलियाँ थी।
हर रोज़ मछलियाँ पकड़ते।
फिर भी न पानी कम होता,
न मछलियाँ, सब और ज़्यादा होता,

लेकिन अब रोने का क्या,
फायदा था उन्हें दुःख,
भूलाकर आगे बढ़ना था।
उस नदी को भूलाना,
उतना आसान नहीं,
जितना सोचा जाय।
वह नदी तो लौट कर वापस,
नहीं आयगी जो हुआ,
उसे भूलाना ही था।
बच्चे भी निराश हैं नदी के,
गायब होने से।
अब वह बच्चे कहाँ नाव बनायेंगे।
अब तो वह नदी नहीं रही।
पहले जैसे नहीं अब वहाँ।
सब बदल चुका था।
लेकिन फिर वह नदी बहुत,
याद दिलाती है।
वह नदी थी तो वह गाँव मे,
थोड़ी रौनक लाती थी।
पचतावा अब नहीं कर सकते हैं।
उस गाँव मे उस नदी की यादें,
अब भी ताज़ी-ताज़ीं।
वह नदी की यादें कभी पूरानी,
नहीं हो सकती हैं।